संवाद दर्शन

सहयोग राशि-5/-

विक्रम संवत : 2083 | वर्ष : 2026

हिन्दी पाक्षिक

अंक : जुलाई (द्वितीय)

तीजन बाई

मौन हुआ महाभारत का कंठ

जैविक खेती से बनें राज्य के सफल कृषक

धार जिले के ग्राम लबरावदा के कृषक नरेंद्र सिंह राठौर ने जिन्होंने अपनी खुद की स्वेच्छा से जैविक खेती को बढ़ावा देने का एक प्रयास किया, जो अत्यंत सफल रहा। वे पिछले एक दशक से विषम परिस्थितियों में भी जैविक खेती करते आ रहे हैं। जैविक खेती के लिए उन्हें उत्तम कृषक का अवार्ड भी मिल चुका है। उन्होंने तमाम विपरीत परिस्थितियां आने के बाद भी हार नहीं मानी। उसका नतीजा यह कि आज गुजरात से लेकर दक्षिण भारत के कुछ शहरों में फार्मर फ्रेंड यानी किसान मित्र माने जाने लगा है।

जब बड़े–बड़े शहरों में किसान को जैविक सब्जी और जैविक मसाला आदि विक्रय में संदेह किया जाता है, तब धार जिले के नरेंद्र ने अपनी मेहनत से एक नई पहचान बनाई । इस प्रकार सफलता प्राप्त करने वाले नरेंद्र अब मध्यम वर्ग के लोगों को भी संहतमंद सब्जिया और फसले उपलब्ध कराने वाले कृषक बने।

कृषक नरेंद्र सिंह राठौर के बताते हैं कि उनके भाई कल्याण सिंह के साथ 60 बीघा जमीन पर पिछले एक दशक से जैविक खेती करते आ रहे हैं। उन्होंने बताया कि पहले जैविक खेती के कारण नुकसान भी हुआ। ऐसे में कई लोगों ने सलाह दी कि खेत में वे रासायनिक खाद का उपयोग कर लें। लेकिन मजबूत इरादे और पर्यावरण की रक्षा के लिए दोनों भाइयों ने कभी भी अपनी पहल से समझौता नहीं किया। नरेंद्र सिंह एक उन्नत कृषक है, जिन्होंने एक दशक पहले राजीव दीक्षित जैसे प्रकृतिविद् से प्रेरणा लेकर यह खेती शुरू की थी।

आज वे विविधता भरी खेती कर रहे हैं। जिसमें गेहूं, चने से लेकर वे करीब 14 तरह की अलग अलग उद्यानिकी और अन्य फसलों की बोवनी करते हैं। इसके पीछे उनका मकसद है कि एक फसल की हालात खराब हो तो अगली फसल में अधिक फायदा मिले।

नरेंद्र बताते है कि यहां उनकी पहल के बाद अन्य लोग भी सीखने के साथ जैविक खेती को अपनाने लगे है। आसपास के क्षेत्र के करीब 100 किसान इस तरह से छोटे छोटे स्तर पर उनका अनुसरण भी करने लगे हैं। जिससे अब उन्हें भी जैविक खेती का महत्व पता चला और वह भी दूसरे को इसे अपनाने के लिए प्रेरणा देते हैं। नरेंद्र ने बताया कि उनका सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य की खेती को बहुत ही प्राकृतिक तरीके से किया जाए।

कीटनाशक की जगह प्राकृतिक चीजें

उन्होंने खेती में नींबू, गुड़ व छाछ को अपना हथियार बना रखा है। इस तरह से वे जैविक घोल तैयार करके कीटनाशकों के आक्रमणों का मुकाबला करते हैं। साथ ही ऐसे प्रयोग करते हैं, जिससे सभी हैरत में आ गए हैं। इस तरह से विविधता भरी खेती और अन्य कई प्रयोगों के चलते उन्होंने एक अच्छा उदाहरण सामने प्रस्तुत कर रखा है। उन्होंने बताया कि वे 10 साल से लगातार अपने खेत में रासायनिक खाद का उपयोग नहीं करने से उन्हें जैविक खेती के संबंध में बकायदा रजिस्ट्रेशन भी प्राप्त हो चुका है। ऐसा करने वाले वे प्रदेश के चुनिंदा किसानों में से एक है।

जल संग्रहण को बढ़ावा

उनके द्वारा खेत तालाब में एक विशेष प्रयोग किया गया है। इसके तहत उन्होंने खेत तालाब तो बनाया जिसमें पानी संग्रहीत किया जा सके। उन्होंने पर्यावरण का सहारा लेकर तालाब के आसपास करीब 35 नीम के पेड़ भी लगा दिए। इस पेड़ के कारण तालाब में वाष्पीकरण नहीं हो, इससे एक पंथ दो काज करके उन्होंने तालाब से भी कई महत्वपूर्ण चीजें लेने का प्रयास किया है। ड्रिप सिंचाई के माध्यम से तालाब का पानी खेतो में पहुँचाते है, जिससे कही न कही वह अपने खेत कम पानी की खपत में बहुत ही बेहतर बनाकर रखते हैं।

लोगों की बात नहीं अपनी समझ को अपनाया

नरेंद्र सिंह और उनके भाई कल्याण ने जैविक खेती में कई बार लोगों ने गलत बात सुनी। उनको कई बार लोगों ने कहा कि आपकी कोशिश सफल नहीं हो पाएगी लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। उनकी मेहनत से जैविक खेती को जीरो बजट वाली खेती बनाने में वक्त लगा। आज वे शून्य बजट से काम कर रहे हैं क्योंकि रासायनिक खाद और अन्य चीजों की उन्हें आवश्यकता नहीं होती है। जो भी खाद व अन्य सामग्री की जरूरत होती है, वह आसपास के पर्यावरण से ही उपलब्ध हो जाती। इस तरह से प्राकृतिक खेती के माध्यम से लगातार भरोसा प्राप्त किया। आज स्थिति यह है कि गुजरात और दक्षिण भारत के कई शहरों में जो चलन चल पड़ा है। इसके तहत ऐसे विश्वसनीय किसानों को फार्मर फ्रेंड कहा जाने लगा है।

संवाद दर्शन
हिन्दी पाक्षिक

सलाहकार संपादक
देवेन्द्र मिश्र

संपादक
संजीव कुमार

प्रकाशक एवं मुद्रक
बिमल कुमार जैन

प्रिंटर्स
लोकवाणी प्रिंटिंग प्रेस,
शशि काम्प्लेक्स,
नाला रोड, कदमकुआँ
पटना

पता
विश्व संवाद केंद्र
104-105, सूर्या अपार्टमेंट,
फ्रेजर रोड, पटना - 800 001
संपर्क = 0612 2216048

ई-मेल- vskpatna@gmail.com
vskbihar@gmail.com
वेबसाइट- www.vskbihar.com

अनुक्रमणिका

सुभाषित

शतेषु जायते शूरः सहस्त्रेषु च पण्डितः!
वक्ता दशसहस्त्रेषु दाता भवति वा न वा !!

अर्थातः– सौ लोगो में एक शूरवीर होता है, हजार लोगों में एक विद्वान होता है, दस हजार लोगों में एक अच्छा वक्ता होता है; वही लाखों में बस एक ही दानी होता है।

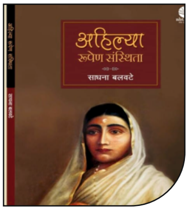

बोध कथा 02
गतिविधि 03
स्मृति शेष 05
निर्णय 09
अपनी हिन्दी 10
स्वास्थ्य 15

पाठकों के नाम पत्र

प्रिय पाठक,
सादर नमस्कार।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानंद होंगे। अक्सर यह देखा जा रहा है कि अपने पवित्र हिंदू धर्म, हिंदू समाज और हिंदू संस्कृति के बारे में अपूर्ण तथ्यों के आधार पर भ्रमपूर्ण बातें की जाती है। हमलोग उसके प्रत्युत्तर में एक कॉलम शुरू करना चाह रहे हैं। आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

शेष शुभ!
सम्पादक

वैद्य और झूठा ब्रह्मज्ञानी

एक नगर में एक शुभचिंतक राजा रहता था। राजा अपनी प्रजा से बड़ा ही स्नेह एवं प्रेम करता था। दुर्भाग्य से उनके राज्य में एक महामारी फैल गई। जिसके रहते लोग मरने लगे और राज्य की अधिकांश जनता अपंग हो गई, लेकिन राज्य में कोई वैद्य नहीं था। राजा ने पड़ोसी राज्य से एक वैद्य बुलवाया। वैद्य भी खुश था कि लोगों की सेवा करके अच्छे से अपनी आजीविका चलाएगा। वैद्यजी ने दिन–रात मेहनत करके कुछ ही दिनों में पुरे गाँव की महामारी दूर कर दी।

जब वैद्यजी लोगों से दवाई के पैसे मांगने लगे तो लोग वैद्यजी को ब्रह्मज्ञान का उपदेश देने लगे। कहने लगे, "हममें भी ब्रह्म है, आपमें भी ब्रह्म है, औषधि में भी ब्रह्म है, सब ब्रह्म है, ब्रह्म का ब्रह्म से कैसा लेना देना!" बेचारे वैद्यजी लोगों के शब्दजाल में फंस गये। इस तरह लोगों को वैद्यजी से मुफ्त में इलाज करवाने का अच्छा बहाना मिल गया।

कुछ दिनों बाद तो वैद्यजी की आजीविका के लाले पड़ने लगे। बड़ी मुश्किल से वैद्यजी को रोटी नसीब हो पाती। परेशान होकर वैद्यजी ने अपने नगर वापस लौटने की सोची। तभी एक दिन राजा का बेटा बीमार पड़ गया। राजवैद्य ने सभी प्रकार की कोशिशें कर ली किन्तु राजकुमार ठीक नहीं हुआ। तभी राजा को परदेसी वैद्यजी का ख्याल आया। उन्होंने तुरंत उन्हें बुला भेजा। वैद्यजी अपने गाँव जा ही रहे थे कि उन्हें राजा का दूत लेने आ गया।

वैद्यजी राजमहल जाकर राजकुमार की चिकित्सा करने लगे। थोड़ा आराम हुआ लेकिन राजकुमार की हालत में कोई खास सुधार नहीं हुआ। तब राजा ने वैद्यजी से कहा, "वैद्यजी! कोई ऐसी दवाई दीजिये कि राजकुमार तुरंत ठीक हो जाये।" मौका देखकर वैद्यजी ने ब्रह्मज्ञानियों को सबक सिखाकर अपना बदला लेने की सोची। वैद्यजी बोले, " ऐसी दवाई बनाई तो जा सकती है लेकिन उसके लिए मुझे कुछ ब्रह्म ज्ञानी लोगों का तेल चाहिए।"

राजा बोला, "इसमें कौन सी बड़ी बात है, अपने राज्य में बहुत से ब्रह्मज्ञानी है। अभी भेजता हूँ अपने सिपाहियों को ब्रह्मज्ञानी लाने के लिए।"

यह बात पुरे नगर में आग की तरह फैल गई कि राजकुमार की चिकित्सा के लिए ब्रह्मज्ञानियों का तेल चाहिए। सब लोग बुरी तरह से डर चुके थे। कोई भी ब्रह्मज्ञानी बनने को राजी नहीं था।

सिपाही दिनभर नगर में घूमते रहे लेकिन जिससे भी पूछते वो यही कहता कि "ब्रह्मज्ञानी क्या होता है? हमें तो पता ही नहीं।" कोई कहता, "हमारे परिवार में आज तक कोई ब्रह्मज्ञानी नहीं हुआ।"

इस तरह थक–हारकर सिपाही खाली हाथ ही लौट आये। इतने में वैद्यजी ने राजकुमार को दूसरी औषधि देकर ठीक कर दिया। वैद्यजी अपना दुखड़ा सुना चुके थे। राजा ने उन सब लोगों को राजदरबार में बुलाया, जो ब्रह्मज्ञान का उपदेश देकर वैद्यजी का पैसा खाकर बैठे थे। राजा के डर से सभी लोगों ने वैद्यजी का पैसा दे दिया और आगे से ऐसा झूठा ब्रह्मज्ञान का उपदेश नहीं देने की कसम खाई।

लोक के परिष्कार से तंत्र सुरक्षित – सुनील आंबेकर

हिंदुस्थान समाचार द्वारा श्आपातकाल के 50 सालश् होने के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम का आयोजन 24 जून को पटना के चंद्रगुप्त प्रबंधन संस्थान में किया गया। श्बिहार आंदोलन और आपातकालश् विषयक संगोष्ठी को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने कहा कि भारत में लोक का परिष्कार होना बहुत आवश्यक है। अगर लोक ठीक रहेगा तो बिगड़ते हुए तंत्र को भी सुधार लेगा। पद्मभूषण सम्मान से सम्मानित वरिष्ठ पत्रकार राम बहादुर राय ने कहा कि जेपी आंदोलन का सूत्रपात पटना की धरती से हुआ और संपूर्ण क्रांति की पूरी प्रकल्पना का केंद्र बिहार रहा। देश में राष्ट्रीय आपातकाल लगने का सबसे बड़ा कारण प्रधानमंत्री पद को लेकर इंदिरा गांधी की लिप्सा थी। आपातकाल के खिलाफ जारी संपूर्ण क्रांति की नीतिगत रूपरेखा तैयार करने में सबसे बड़ा योगदान किसी का है तो वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व सरसंचालक रहे बाला साहब देवरस का है। आपातकाल लगने के 6 महीने पूर्व 8 जनवरी 1975 को लखनऊ में प्रेस वार्ता कर बालासाहब देवरस ने इंदिरा गांधी को चुनौती दी थी और आपातकाल लगने के ठीक 11 दिन पूर्व यानी 14 जून 1975 को भी उन्होंने दिल्ली में अपने संकल्प को दोहराया था।

आचार्य शत्रुघ्न प्रसाद के उपन्यास पर हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी

आचार्य शत्रुघ्न प्रसाद शोध संस्थान एवं अरविंद महिला कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में 12 जुलाई को अरविंद महिला कॉलेज में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में आचार्य शत्रुघ्न प्रसाद के ऐतिहासिक उपन्यास श्तख़्ते ताऊसश् तथा श्आचार्य भर्तृहरि और उनका वाक्यपदीयम्श् विषय पर गहन विमर्श हुआ। उद्घाटन सत्र में बिहार विधान परिषद के सभापति अवधेश नारायण सिंह ने आचार्य शत्रुघ्न प्रसाद के योगदान को याद किया। प्रो. सदानंद गुप्त ने तख़्ते ताऊस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला, जबकि प्रो. राजेंद्र प्रसाद गुप्ता ने उनकी रचनाओं को राष्ट्रीय एकता का वाहक बताया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि बिहार लोक सेवा आयोग के सदस्य प्रो. अरुण कुमार भगत थे।

बनेगा गरीबनाथ मंदिर सर्किट

मुजफ्फरपुर में स्थित प्रसिद्ध बाबा गरीबनाथ मंदिर को भव्य व दिव्य धार्मिक पर्यटन केंद्र के रूप में स्थापित किया जाएगा। काशी विश्वनाथ की तर्ज पर बाबा गरीबनाथ कारिडोर को विकसित किया जाएगा। छाता बाजार, मक्खन साह चौक, प्रभात सिनेमा चौक व मंदिर से सटे भव्य द्वार का निर्माण किया जाएगा। मंदिर के ऊपरी भाग का सुंदरीकरण होगा। साहू पोखर में ब्रिज का निर्माण किया जाएगा। मंदिर रोड की लोगों के सहयोग से फेस लिफ्टिंग की जाएगी। श्रद्धालुओं के लिए छाता बाजार से मंदिर होते हुए मक्खन साह चौक के आगे तक पैदल मार्ग का निर्माण होगा। बिजली तार व जलनिकासी की व्यवस्था भी पूरी तरह से अंडरग्राउंड होगी। मंदिर व आसपास के इलाके के साथ कांवरिया मार्ग का भी विकास होगा। फकुली में भी प्रवेश द्वार व धर्मशाला का निर्माण कराया जाएगा।

बंगाल में गूंजा 'वंदे मातरम्'

— मनमोहन वैद्य

"तुमि विद्या, तुमि धर्म"—यहाँ "विद्या" भारत की अध्यात्म—विद्या है, जो मोक्ष का मार्ग सिखाती है। 'मैं' को छोटा कर 'हम' की भावना को बड़ा करना तथा अपनेपन के भाव से समाज को देना, समाज को लौटाना—यही 'धर्म' हैय यहाँ 'धर्म' का अर्थ 'रिलिजन' नहीं है। भगिनी निवेदिता ने कहा है कि जिस समाज में लोग अपने परिश्रम का पारिश्रमिक केवल अपने पास न रखकर समाज को देते हैं, उस समाज के पास एकत्रित सामाजिक पूँजी के बल पर संपूर्ण समाज संपन्न और समृद्ध बनता है, तथा समाज का प्रत्येक व्यक्ति भी संपन्न और समृद्ध बनता है। यही "धर्म" है। इसलिए एक अर्थ में समाज की इस सामाजिक पूँजी को समृद्ध करना ही "धर्म" है। इसीलिए स्वतंत्रता के बाद भारत के नेतृत्व ने विचारपूर्वक लोकसभा के लिए "धर्मचक्र प्रवर्तनाय", राज्यसभा के लिए "सत्यम् वद, धर्मं चर", सर्वोच्च न्यायालय के लिए "यतो धर्मस्ततो जयः" और राष्ट्रध्वज में धर्मचक्र का समावेश किया। यह विद्या और धर्म भारतमाता के हृदय में हैं। यही भारत का प्राण हैं।

यह भारतमाता शक्ति की देवी दुर्गा, समृद्धि की देवी लक्ष्मी और ज्ञान की देवी सरस्वती—तीनों का एकत्र रूप है। यही भारत है। इसी कारण 1905 से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशनों में संपूर्ण 'वंदे मातरम' का गान होता रहा। इसे गाने में लगभग तीन मिनट का समय लगता है। इसमें सांप्रदायिकता कहाँ है?

बाद में विभाजनकारी और सांप्रदायिक तत्वों के प्रभाव में आकर इसके विरोध का क्रम शुरू हुआ, जो आज भी किसी न किसी रूप में जारी है। इसमें सांप्रदायिकता देखने वाले भारत की आध्यात्मिक धरोहर और परंपरा के बारे में अपना अज्ञान ही प्रदर्शित करते हैं। अथवा ऐसा प्रतीत होता है कि वे तब ब्रिटिश शासन के और आज भारत—विरोधी विभाजनकारी तत्वों के प्रभाव में हैं, या उनके हाथों में खेल रहे हैं।

किंतु 'वंदे मातरम' ने भारत के प्राणों को झकझोरा, राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया और जन—जन में स्वाधीनता का भाव प्रज्वलित किया। यही कारण था कि बंगाल—विभाजन के विरुद्ध इतना व्यापक जनक्षोभ उत्पन्न हुआ कि अंततः ब्रिटिश शासन को अपना प्रस्ताव वापस लेना पड़ा। अभी भारत सरकार ने 'वंदे मातरम' को प्राथमिकता देकर संपूर्ण 'वंदे मातरम' के गान का आग्रह किया है, यह समुचित और सराहनीय है।

2026 के बंगाल चुनाव के परिणामों ने 1905 से 1911 के बीच बंगाल में हुई जन—जागृति, संकल्प, राष्ट्रीय चेतना और निर्णायक सक्रियता की याद ताजा कर दी है। बंगाल को भाषिक अस्मिता के आधार पर अलग करने के षड्यंत्र इस चुनाव ने ध्वस्त कर दिए हैं। बंगाली भाषा अलग होते हुए भी उसकी अस्मिता भारत की आध्यात्मिक अस्मिता से अलग नहीं, बल्कि उसका अभिन्न हिस्सा है—यह इस चुनाव के परिणामों ने सिद्ध किया है।

1905 में जिस तरह ब्रिटिश औपनिवेशिक शक्तियाँ और जिहादी कट्टरपंथी भारत की राष्ट्रीय पहचान को नष्ट करने के लिए एक साथ मिलकर काम कर रहे थे, उसी तरह 2026 में विचारहीन राजनेता, जिहादी कट्टरपंथी और कल्चरल मार्क्सवादी बंगाल के भारत के साथ संबंधों को समाप्त करने के लिए मिलकर काम कर रहे थे। 1905 और 2026 दोनों ही समय बंगाल के हिंदुओं को अपने अस्तित्व पर आए संकट का सामना करना पड़ा है। प्रतीत होता है कि रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, श्री अरविंद, और रवीन्द्रनाथ ठाकुर के बंगाल की अस्मिता पुनः जागृत हो उठी है। भारत का सर्वसमावेशी, एकात्म और आध्यात्मिक जीवन—दर्शन—अर्थात् भारत का हिंदुत्व—एक बार फिर मुखर होकर सामने आया है। निःसंदेह, यह बंगाल का "वंदे मातरम क्षण" है।

(अ. भा. कार्यकारिणी सदस्य, रा. स्व. संघ)

मौन हुआ महाभारत का कंठ

–नीरज कृष्ण

भारतीय संस्कृति में कुछ लोग केवल जन्म नहीं लेते, वे एक परंपरा का पुनर्जन्म बनकर आते हैं। वे महाकाव्यों को पढ़ते नहीं, उन्हें अपनी साँसों में बसाकर पीढ़ी–दर–पीढ़ी जीवित रखते हैं। तीजन बाई ऐसी ही विरल लोकसाधिका थीं। उन्हें केवल पांडवानी की महान गायिका कहना पर्याप्त नहीं; वे सचमुच महाभारत की बेटी थीं।

उन्होंने महाभारत को शास्त्र की सीमाओं से निकालकर गाँव की चौपालों, जनजातीय अंचलों और विश्व के प्रतिष्ठित मंचों तक पहुँचाया। जब वे हाथ में तंबूरा लेकर मंच पर उतरती थीं, तो उनके स्वर में भीम का पराक्रम, द्रौपदी की वेदना, अर्जुन का द्वंद्व और कृष्ण की प्रज्ञा एक साथ साकार हो उठते थे। वे पात्रों का अभिनय नहीं करती थीं; उन्हें अपने कंठ में पुनर्जीवित कर देती थीं। इसलिए उनकी पांडवानी केवल लोकगायन नहीं, भारतीय सभ्यता की आत्मा का सजीव स्वर थी।

उनके निधन के साथ केवल एक कलाकार नहीं, भारतीय लोकपरंपरा का एक अमर कंठ मौन हुआ है। फिर भी उनका स्वर कभी नहीं थमेगा। जब–जब किसी चौपाल में पांडवानी गूँजेगी, जब–जब महाभारत लोक की भाषा में सुनाया जाएगा, तब–तब तीजन बाई जीवित रहेंगी। क्योंकि कुछ कलाकार इतिहास का हिस्सा नहीं बनते, वे स्वयं इतिहास की आवाज़ बन जाते हैं।

छत्तीसगढ़ के गनियारी गाँव के एक साधारण परिवार में 24 अप्रैल, 1956 को जन्मी तीजन ने बचपन में अपने नाना ब्रजलाल परधा से महाभारत की कथाएँ सुनते–सुनते पांडवानी को अपनी साँसों में बसा लिया। उस दौर में महिलाओं का पांडवानी गाना सामाजिक वर्जना माना जाता था, इसलिए वे छिप–छिपकर अभ्यास करती थीं।

उनकी विलक्षण प्रतिभा को लोकगुरु उमेद सिंह देशमुख ने पहचानकर मार्गदर्शन दिया। मात्र 13 वर्ष की आयु में उन्होंने दुर्ग ज़िले के चंद्रखुरी गाँव में पहली सार्वजनिक प्रस्तुति दी और देखते ही देखते लोकमंच की नई पहचान बन गईं। बाल विवाह, सामाजिक बहिष्कार और पारिवारिक विरोध ने भी उनके कदम नहीं रोके। एक

छोटी–सी झोंपड़ी से शुरू हुई उनकी साधना अंततः विश्व के सबसे प्रतिष्ठित सांस्कृतिक मंचों तक पहुँची और उन्हें भारतीय लोक–संस्कृति की अमर पहचान बना गई।

हबीब तनवीर ने जब तीजन बाई की अद्भुत प्रतिभा को पहचाना, तो उनके प्रयासों से उन्हें तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के समक्ष प्रस्तुति का अवसर मिला। वही क्षण उनकी लोकयात्रा का राष्ट्रीय और वैश्विक प्रस्थान–बिंदु बन गया। इसके बाद उन्होंने विश्वभर के मंचों पर पांडवानी की ऐसी गूँज बिखेरी कि छत्तीसगढ़ की लोकधारा अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक पहचान बन गई।

वह मंच पर आती थीं तो उनके हाथ में केवल एक तंबूरा होता था। वही तंबूरा कभी भीम की गदा बन जाता, कभी अर्जुन का गांडीव, कभी दुर्योधन का अहंकार और कभी द्रौपदी के खुले केश। उनके पास न भव्य मंच सज्जा होती थी, न आधुनिक प्रकाश व्यवस्था। फिर भी दर्शकों की आँखों के सामने पूरा कुरुक्षेत्र साकार हो उठता था। यही लोककला का चमत्कार था और यही तीजन बाई की साधना।

लोक कलाएँ तभी अमर होती हैं, जब कोई साधक उनका केवल प्रस्तोता नहीं, बल्कि उनका पर्याय बन जाए। तीजन बाई ऐसी ही लोकसाधिका थीं। उन्होंने पांडवानी का गायन नहीं किया, उसे अपनी आत्मा में जिया। उनके लिए महाभारत कोई प्राचीन ग्रंथ नहीं, बल्कि मनुष्य के साहस, करुणा, धर्म और आत्मसंघर्ष की जीवित चेतना था।

इसलिए उनकी प्रस्तुति केवल एक लोककला का प्रदर्शन नहीं, भारतीय सभ्यता की धड़कनों का साक्षात्कार बन जाती थी।

मंच पर उनके हाथ का साधारण–सा तंबूरा कभी भीम की गदा, कभी अर्जुन का गांडीव, कभी द्रौपदी की अस्मिता और कभी कृष्ण की प्रज्ञा का प्रतीक बन जाता था। वे पात्रों का अभिनय नहीं करती थीं, उन्हें अपने कंठ में पुनर्जीवित कर देती थीं। उनके स्वर में शौर्य की गर्जना और करुणा की गहराई एक साथ प्रवाहित होती थी। यही कारण है कि तीजन बाई ने केवल महाभारत नहीं गाया, बल्कि उसे भारतीय लोकजीवन की साँसों में अमर कर दिया।

तीजन बाई की गायकी की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उसमें वीरता की हुंकार और करुणा की संवेदना एक साथ प्रवाहित होती थीं। एक क्षण में उनका स्वर अन्याय के विरुद्ध भीम की गर्जना बन उठता, तो अगले ही पल द्रौपदी की पीड़ा और मानवीय वेदना की ऐसी गहराई रच देता कि श्रोता भीतर तक द्रवित हो जाते। उन्होंने महाभारत का केवल गायन नहीं किया, बल्कि उसे लोकजीवन की धड़कन बना दिया।

लोकमंच से आरंभ हुई उनकी स्वर–यात्रा शीघ्र ही विश्व के प्रतिष्ठित सांस्कृतिक मंचों तक पहुँच गई। फ्रांस, स्विट्जरलैंड, जर्मनी, इटली और ब्रिटेन सहित अनेक देशों में उनकी पांडवानी ने छत्तीसगढ़ की लोकपरंपरा को वैश्विक पहचान दिलाई। 1988 में दूरदर्शन के चर्चित धारावाहिक 'भारत एक खोज' में उनकी प्रस्तुति ने उन्हें देश के घर–घर तक पहुँचा दिया।

उनका जीवन स्वयं एक लोकमहाकाव्य था। साधारण परिवार में जन्मी इस लोकसाधिका ने सामाजिक वर्जनाओं, तिरस्कार और बहिष्कार का सामना करते हुए उस पांडवानी को अपनाया, जिसे लंबे समय तक पुरुषों की विधा माना जाता था। उन्होंने अपने संघर्ष से सिद्ध किया कि महान कला साधनों से नहीं, साधना से जन्म लेती है। यही साधना एक ग्रामीण बालिका को विश्वमंच तक ले गई और उसे भारतीय लोकसंस्कृति की अमर आवाज़ बना गई।

तीजन बाई की सबसे बड़ी उपलब्धि विश्व के मंचों तक पहुँचना नहीं, बल्कि लोककला को उसका खोया हुआ गौरव लौटाना था। उन्होंने सिद्ध किया कि महान कला राजसभाओं या शास्त्रीय परंपराओं की मोहताज नहीं होती; वह मिट्टी की सोंधी गंध से भी जन्म ले सकती है। स्वर, अभिनय और भावों के अद्भुत संगम से वे सीमित साधनों में भी संपूर्ण महाभारत को सजीव कर देती थीं। यही उनकी कला का चमत्कार और उनकी साधना की सबसे बड़ी विजय थी।

उनकी साधना को देश और दुनिया ने समान सम्मान दिया। भारत सरकार ने उन्हें क्रमशः पद्मश्री, पद्म भूषण और पद्म विभूषण से अलंकृत किया, जबकि जापान के प्रतिष्ठित फुकुओका कला एवं संस्कृति पुरस्कार ने उनकी कला को वैश्विक प्रतिष्ठा प्रदान की। ये सम्मान केवल तीजन बाई के व्यक्तित्व के नहीं थे, बल्कि उस भारतीय लोकपरंपरा के सम्मान थे, जिसे उन्होंने अपने कंठ से विश्वमंच तक पहुँचाया। तीजन बाई के जब शब्द समाप्त हो जाते थे, वहाँ उनकी आत्मा महाभारत सुनाने लगती थी। उनके श्रोता केवल एक कथा सुनकर नहीं लौटते थे; वे अपने भीतर नए नैतिक प्रश्न, नई संवेदनाएँ और भारतीय संस्कृति के प्रति गहरा गर्व लेकर लौटते थे।

तीजन बाई ने महाभारत को पढ़ा नहीं, जिया; गाया नहीं, अपनी आत्मा में उतार लिया। जब वे तंबूरा लेकर मंच पर उतरती थीं, तो भीम का पराक्रम, द्रौपदी की वेदना, अर्जुन का द्वंद्व और कृष्ण की प्रज्ञा उनके कंठ से सजीव हो उठते थे। उन्होंने महाभारत को विद्वानों की व्याख्याओं से निकालकर गाँव की चौपालों, जनजातीय अंचलों और विश्व के प्रतिष्ठित मंचों तक पहुँचा दिया।

उनके निधन पर शोक केवल एक महान कलाकार का नहीं, बल्कि उस पीढ़ी का है, जिसके लिए कला व्यवसाय नहीं, तपस्या थी; प्रसिद्धि लक्ष्य नहीं, साधना का स्वाभाविक परिणाम थी। तकनीक के इस युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आवाज़ों की प्रतिकृतियाँ बना सकती है, किंतु किसी कलाकार की साधना, लोकस्मृति और आत्मा का सृजन नहीं कर सकती। तीजन बाई हमें याद दिलाती हैं कि संस्कृति तकनीक से नहीं, परंपरा से जीवित रहती है।

देसी गाय के दूध में मिलता है सोना

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार भारतीय गोवंश की रीढ़ से सूर्य केतु नामक एक विशेष नाड़ी होती है, जब इस पर सूर्य की किरणें पड़ती हैं, तब यह नाड़ी सूर्य किरणों के तालमेल से सूक्ष्म स्वर्ण कणों का निर्माण करती है। यही कारण है कि देसी नस्ल की गायों का दूध पीलापन लिए होता है और इस दूध में जीवन रक्षक विशेष औषधीय गुण होता है। देसी गाय के दूध, दही और घी में सोना की भी आंशिक मात्रा पाई जाती है। ऐसा कहा जाता है कि करीब 16 सौ किलोलीटर दूध में 10 ग्राम सोना पाया जाता है। जिससे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

गोबर और गोमूत्र का भी महत्व

देसी गाय का गोबर व गोमूत्र शक्तिशाली है। रासायनिक विश्लेषण में देखें कि खेती के लिए जरूरी 23 प्रकार के प्रमुख तत्व गोमूत्र में पाए जाते हैं। इन तत्वों में कई महत्वपूर्ण मिनरल, अम्ल, लवण, विटामिन, प्रोटीन और कार्बोहाइड्रेट होते हैं। गोबर में विटामिन बी–12 प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। यह रेडियोधर्मिता को भी सोख लेता है। गोबर में खेती के लिए लाभकारी जीवाणु, बैक्टीरिया, फंगल आदि बड़ी संख्या में रहते हैं। देसी गाय द्वारा छोड़ी गई श्वास से सभी अदृश्य एवं हानिकारक बैक्टीरिया मर जाते हैं। बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय में देशी गौ वंश से संबंधित ऐसे तमाम शोध को बढ़ावा दिया जा रहा है।

हमारे देसी गौ–वंश

गीर

गीर भारत की एक प्रसिद्ध दुधारू नस्ल है। इसकी उत्पत्ति, विचरण व प्राप्ति क्षेत्र गीर की पहाड़ियों, काठियावाड़ के जंगल, जूनागढ़, भावनगर, राजकोट एवं गुजरात के अमरेली जिले हैं। इस नस्ल के बैल लगभग प्रत्येक प्रकार के कार्य के लिये कुशल होते है। गुजरात राज्य के दुग्ध उत्पादन में इस नस्ल का विशेष योगदान है। इस नस्ल में लाल एवं सफेद तथा काले सफेद या पूर्ण रूपेण लाल रंग के बालों वाले पशु मिलते है। त्वचा का रंग काला या भूरा होता है। माथा विकसित चौड़ा तथा उन्नत होता है। इसकी आँखों की स्थिति ऐसी होती है कि ऐसा लगता है जैसे पशु आँख मूँद कर खड़ा हो। पूँछ लम्बी व खुर काले व मध्यम आकार के होते है। कान लम्बे व लटके हुये तथा अग्र भाग पर गोलाई लिये हुए व ऐंठें हुए होते हैं। कानों के अग्रभाग पर एक कटाव रहता है। सींग मुडे हुए एवं अग्रभाग पर पीछे के ओर झुके हुए रहते है। त्वचा ढीली व परतदार प्रतीत होतीहै।

शरीर आनुपातिक रूप से भारी प्रतीत होता है। इस नस्ल की गायों में बाँक पूर्ण विकसित होता है तथा थन गोलाई लिये हुए होते हैं।

गंगातीरी

यह उत्तर भारत में गंगा के तटीय प्रदेश विशेषकर बिहार और उत्तर प्रदेश के वाराणसी क्षेत्र की नस्ल है। यह हरियाणा प्रजाति से विकसित की गई। लगभग 2 दशक पूर्व लुप्त होने के कगार तक आ गई थी। स्थानीय गौ–भक्तो, सुरभि शोध संस्थान आदी के प्रयत्नों से बनारस में विकसित होने लगी। यह सामान्यतः सफेद रंग में पाई जाती है। बैलों का कूबडा लंबा एवं गर्दन का रंग कुछ भूरा मिलता है। दिन में औसतन १० से १५ लिटर दूध देती है। आँख काले एवं चेहरा पतला होता है। सींग छोटे तथा उपर उठे हुए होते हैं। पूँछ लंबी एवं बाल घने काले होते है।

मोबाइल की स्क्रीन से सीमाओं तक जिहाद की नई दस्तक

–दीपशिखा

बिहार के सीमांचल क्षेत्र से आई एक गिरफ्तारी ने राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े उस खतरे को फिर उजागर कर दिया है, जो अब बारूद, बंदूक और सीमा पार घुसपैठ से कहीं आगे बढ़कर मोबाइल स्क्रीन, सोशल मीडिया और एन्क्रिप्टेड चौट तक पहुंच चुका है। कटिहार जिले के कोढ़ा थाना क्षेत्र के मूसापुर गांव से एक युवक की गिरफ्तारी ने सुरक्षा एजेंसियों को ऐसे संभावित डिजिटल नेटवर्क की जांच में जुटा दिया है, जिसके तार पाकिस्तान में बैठे कथित संचालकों से जुड़े होने का दावा किया जा रहा है।

प्रारंभिक जांच के अनुसार, गिरफ्तार युवक पर आरोप है कि वह सोशल मीडिया के माध्यम से पाकिस्तान स्थित तत्वों के संपर्क में था और सीमांचल क्षेत्र में भारत विरोधी सोच फैलाने के लिए एक नया नेटवर्क तैयार करने का प्रयास कर रहा था। जांच एजेंसियों का यह भी दावा है कि उसका संपर्क पाकिस्तानी गैंगस्टर राणा हुनेन (उर्फ राणा हुसैन) और शहजाद भट्टी के नेटवर्क से जुड़े लोगों से था। हालांकि इन सभी आरोपों की पुष्टि न्यायिक प्रक्रिया और विस्तृत जांच के बाद ही होगी, लेकिन यह मामला सुरक्षा एजेंसियों के लिए गंभीर चिंता का विषय बन गया है।

आतंकवाद का चेहरा लगातार बदल रहा है। कभी सीमाओं के रास्ते हथियार और घुसपैठ सबसे बड़ी चुनौती हुआ करते थे, लेकिन अब डिजिटल प्लेटफॉर्म विचारों को हथियार बनाने का माध्यम बन रहे हैं। व्हाट्सएप, फेसबुक, टेलीग्राम और अन्य सोशल मीडिया मंचों के जरिए कट्टरपंथी प्रचार, दुष्प्रचार और युवाओं को प्रभावित करने की कोशिशें सुरक्षा व्यवस्था के सामने नई चुनौती बनकर उभरी हैं।

इस मामले में भी डिजिटल गतिविधियों के आधार पर सुरक्षा एजेंसियों ने संदिग्ध की पहचान की। खुफिया इनपुट मिलने के बाद एनआईए, एसटीएफ और बिहार पुलिस की संयुक्त टीम ने कार्रवाई करते हुए उसे हिरासत में लिया। उसके मोबाइल फोन, सोशल मीडिया चौट और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को जब्त कर फॉरेंसिक जांच शुरू की गई है। अब एजेंसियां यह पता लगाने का प्रयास कर रही हैं कि उसके संपर्क में और कौन–कौन लोग थे तथा क्या इस नेटवर्क की जड़ें बिहार से बाहर तक फैली हुई हैं।

सीमांचल भौगोलिक दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्र माना जाता है। नेपाल और बांग्लादेश की निकटता, बड़ी आबादी तथा तेज़ी से बढ़ती डिजिटल पहुंच इसे सुरक्षा एजेंसियों के लिए विशेष महत्व का क्षेत्र बनाती है। ऐसे में किसी भी संदिग्ध गतिविधि की समय रहते पहचान राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

साथ ही, यह भी उतना ही आवश्यक है कि किसी एक व्यक्ति के कथित कृत्य को पूरे क्षेत्र या किसी समुदाय से जोड़कर न देखा जाए। आतंकवाद का कोई धर्म, जाति या क्षेत्र नहीं होता। जांच का आधार केवल तथ्य, साक्ष्य और कानून होना चाहिए। यही लोकतंत्र और न्याय व्यवस्था की मूल भावना भी है।

कटिहार की यह घटना केवल एक गिरफ्तारी की खबर नहीं है, बल्कि डिजिटल युग में बदलती सुरक्षा चुनौतियों का संकेत भी है। यह समय तकनीकी सतर्कता बढ़ाने, युवाओं में डिजिटल साक्षरता विकसित करने और समाज को अफवाहों व ऑनलाइन कट्टरपंथ से बचाने का है। राष्ट्रीय सुरक्षा केवल सीमा पर तैनात जवानों की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि डिजिटल दुनिया में सजग नागरिक बनने की भी एक साझा जिम्मेदारी है।

हलाला मामले में उच्च न्यायालय द्वारा मौलाना की याचिका खारिज

अमरोहा के सैदनागली थाना अंतर्गत नाबालिग पीड़िता द्वारा दर्ज करवाई गई प्राथमिकी को रद्द करने से इंकार करते हुए इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने कहा कि निकाह, हलाला और तीन तलाक जैसे रस्म –रिवाजों के चक्रव्यूह में फंसा कर महिला के यौन शोषण की इजाजत नहीं दी जा सकती। यह संवैधानिक मूल्यों, समानता और मानवीय गरिमा की अवधारणा से कोसों दूर है। न्यायालय ने कहा कि अब तक जो भी तथ्य सामने आए हैं, वे अंतरात्मा को झकझोर देने वाले हैं।

पीड़िता ने आरोप लगाया कि बालिग होने से पहले निकाह किया गया। इसके बाद तीन तलाक, हलाला और फिर दोबारा निकाह कराने के नाम पर लगातार यौन शोषण किया जाता था। एफआईआर दर्ज होने के बाद अभियुक्तों ने उच्च न्यायालय में एफआईआर रद्द करने और गिरफ्तारी पर रोक लगाने की मांग करते हुए याचिकाएं दायर की थीं। उच्च न्यायालय ने याचिकाओं को खारिज कर दिया। आरोप बेहद गंभीर हैं और प्रथम दृष्टया सभी आरोपियों की भूमिका कानून के खिलाफ दिखाई दे रही है। जांच के इस प्रारंभिक चरण में एफआईआर रद्द करने का कोई आधार नहीं बनता और विवेचना जारी रहेगी।

न्यायमूर्ति जे.जे. मुनीर और न्यायमूर्ति तरुण सक्सेना की खंडपीठ ने पीड़िता के पूर्व शौहर, चाचा, मौलाना सहित अन्य आरोपियों की याचिकाएं खारिज कर दी। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने टिप्पणी करते हुए कहा कि इन प्रथाओं की आड़ में महिलाओं के यौन शोषण की अनुमति नहीं दी जा सकती है।

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2015 में पीड़िता को

अजहर नवाज के साथ निकाह करने के लिए विवश किया गया था। तब पीड़िता की उम्र केवल 15 वर्ष थी। अभियुक्त अजहर नवाज ने वर्ष 2016 के जनवरी माह में पीड़िता को तीन तलाक दे दिया। कुछ समय बाद अजहर नवाज ने पीड़िता से पुनः निकाह करने की बात की। वर्ष 2016 के नवंबर में उसने मौलाना कयूम के साथ हलाला कराया और फिर अभियुक्त मौलाना से तलाक करा कर अजहर नवाज ने निकाह किया। पहली बार जब हलाला किया गया तो पीड़िता की उम्र 16 वर्ष थी। पीड़िता ने मजिस्ट्रेट के सामने बयान दिया कि वह उस समय नाबालिग थी और उस समय हलाला का मतलब भी नहीं मालूम था। पीड़िता ने कहा कि उसके साथ हलाला कि आड़ में अभियुक्त मौलाना कयूम ने दुष्कर्म किया था। अजहर नवाज ने पीड़िता के साथ दोबारा निकाह किया और 4 वर्ष बाद फिर तीन तलाक दे दिया। इसके बाद अजहर नवाज ने दूसरी शादी कर ली। बाद में दोबारा विवाह के लिए कथित 'डबल हलाला' के बहाने आरोपी के भाइयों और अन्य लोगों ने उसके साथ सामूहिक दुष्कर्म किया।

आरोपियों ने दलील दी कि ट्रिपल तलाक और निकाह हलाला उस समय मुस्लिम पर्सनल लॉ के तहत मान्य थे और प्राथमिकी संपत्ति व बाल अभिरक्षा विवाद में दबाव बनाने के उद्देश्य से दर्ज कराई गई है।

उच्च न्यायालय ने कहा कि प्रथम दृष्टया यह पता चलता है कि जब पीड़िता नाबालिग थी, तब उसके साथ दुष्कर्म हुआ था। उसके बाद एक घटना के दौरान सामूहिक दुष्कर्म भी हुआ था, जिसे कथित तौर पर दूसरे हलाला के नाम पर छिपाया गया। पीड़िता की ओर से लगाये गए आरोपों की पूरी जांच की आवश्यकता है।

सही शीर्षक

—रवींद्र कुमार

1. इस वर्ष पांच हजार शिक्षक होंगे बहाल

चालू वर्ष में पांच हजार शिक्षकों की होने वाली नियुक्ति से संबंधित समाचार में यह शीर्षक लगाया गया है। इससे स्पष्ट है कि यहां नियुक्ति के अर्थ में बहाली शब्द का प्रयोग किया गया है, जबकि ये दोनों समानार्थी शब्द नहीं हैं। नियुक्ति संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ नियुक्त होने की क्रिया या भाव है। दूसरी तरफ बहाली फारसी का शब्द है, जिसका अर्थ अपने स्थान पर फिर से कायम हो जाना अथवा पुनर्नियुक्ति है। नियुक्ति के लिए अंग्रेजी पर्याय एप्षाइंटमेंट, इंप्लायमेंट, पोस्टिंग आदि, जबकि बहाली का अंग्रेजी पर्याय रिइंस्टेटमेंट, रिस्टोरेशन, टू दी ओरिजिनल स्टेटस अथवा फेजीशन है।

इससे स्पष्ट है कि नियुक्ति और बहाली के अर्थों में थोड़ा फर्क है, जिससे इन्हें पर्यायवाची समझ कर एक के स्थान पर दूसरे का प्रयोग कर देना युक्तिसंगत नहीं होगा। बहाली शब्द के कुछ प्रयोगों पर ध्यान देने से स्थिति और स्पष्ट हो जाएगी; जैसे (क) शिक्षा विभाग के सभी निलंबित कर्मचारियों की सेवा बहाल कर ली गई, (ख) उच्च न्यायालय ने निचली अदालत के फैसले को बहाल रखा। इन दोनों वाक्यों में बहाल के स्थान पर नियुक्त का प्रयोग नहीं किया जा सकता। अतः स्पष्ट है कि नयी नियुक्ति के लिए बहाली शब्द का प्रयोग करना ठीक नहीं होगा, क्योंकि बहाल शब्द का प्रयोग पुरानी स्थिति को पुनः कायम करने के अर्थ में होता है। अतः यहां शीर्षक होना चाहिए था—

इस वर्ष पांच हजार शिक्षक होंगे नियुक्त

---

2. सोए में किसान की गोली मारकर हत्या

इस शीर्षक के समाचार में बताया गया है कि किसान की उस समय हत्या कर दी गई, जब वह सोया हुआ था। लेकिन, इस शीर्षक से ऐसा लगता है, जैसे गोली मारने वाला सोया हुआ था और सोये में ही लोडेड पिस्तौल का घोड़ा दब जाने के कारण किसान की हत्या हो गई। इसे स्पष्ट करने के लिए एक दूसरा उदाहरण देखें— सोए में पलंग से गिरने से बच्चे का सिर फूटा। इस गलतफहमी की वजह विभक्ति चिह्न 'में' है। यदि इसका प्रयोग नहीं हुआ होता, तो कोई भ्रम नहीं होता। शब्दों के आपसी संबंध को विभक्त करने के कारण ही इन्हें विभक्ति चिह्न कहा जाता है। अतः यदि किसान की हत्या हुई है, तो शीर्षक होना चाहिए —

सोए किसान की गोली मारकर हत्या

---

3. समाजिक दायित्व के निर्वहन के लिए सरकार कृत संकल्प : मुख्यमंत्री

इस शीर्षक का 'निर्वहन' शब्द विचारणीय है, जिसका निर्वाह करने के अर्थ में धड़ल्ले से प्रयोग हो रहा है। लेकिन, यदि इस शब्द पर विचार करें, तो 'निर्वहन' का यह अर्थ हो ही नहीं सकता। दरअसल, वहन परिवहन आदि शब्दों के अधिक प्रचलन में होने के कारण इन्हीं की नकल कर यह शब्द गढ़ लिया गया है। यहां उल्लेखनीय है कि 'निः' निषेधवाचक है और जब इसकी किसी शब्द के साथ संधि होती है, तो यह उस शब्द को निषेधसूचक बना देता हैं; जैसे– निर्धन अर्थात जिसके पास धन न हो यानी गरीब, निर्मल अर्थात जिसमें किसी प्रकार का मल या दोष न हो यानी शुद्ध या पवित्र, निर्दलीय अर्थात जिसका किसी दल से संबंध न हो, निर्जन अर्थात जहां कोई जन न हो यानी सुनसान, निर्जल अर्थात बिना जल का, निर्गंध अर्थात जिसमें गंध न हो, निर्गुण अर्थात जिसमें कोई गुण न हो, यानी जो सत्व, रज और तम गुणों से रहित हो, निर्भय अर्थात निडर, निर्मोही अर्थात जिसे मोह या ममता न हो, निर्मूल अर्थात बिना मूल या जड़ को यानी जिसका कोई आधार न हो, निर्योग्य अर्थात योग्यता से रहित यानी अयोग्य, निर्लज्ज अर्थात लज्जा से रहित यानी बेशर्म या बेहया, निर्वंश अर्थात जिसका वंश न हो, निर्वस्त्र अर्थात बिना वस्त्र का यानी नंगा आदि। ये तो कुछ उदाहरण मात्र हैं। अतः जब 'वहन' के साथ 'निः' की संधि होगी, तो अन्य शब्दों की भांति 'वहन' भी निषेध सूचक हो जाएगा। इस प्रकार स्पष्ट है कि 'निर्वहन का निर्वाह से कोई संबंध नहीं है।

अतः इस शीर्षक को इस प्रकार लिखना सही होगा—

सामाजिक दायित्व के निर्वहण के लिए सरकार कृतसंकल्प : मुख्यमंत्री

'खेत बचाओ अभियान' ने पकड़ी रफ्तार

सतत कृषि को बढ़ावा देने और मृदा स्वास्थ्य की सुरक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, महात्मा गांधी समेकित कृषि अनुसंधान संस्थान, मोतिहारी ने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, समस्तीपुर के सहयोग से मोतिहारी में 'खेत बचाओ अभियान' पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया।

यह कार्यशाला राष्ट्रव्यापी 'खेत बचाओ अभियान 2026' के अंतर्गत आयोजित की गई, जिसका उद्देश्य मृदा स्वास्थ्य की रक्षा करना, रासायनिक उर्वरकों पर अत्यधिक निर्भरता को कम करना, संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन को बढ़ावा देना तथा वैज्ञानिक एवं सतत कृषि पद्धतियों के माध्यम से किसानों को सशक्त बनाना है।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सांसद एवं पूर्व केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री राधा मोहन सिंह उपस्थित रहे। इस अवसर पर बिहार सरकार के दुग्ध, मत्स्य एवं पशु संसाधन मंत्री नंद किशोर राम, विधायक कृष्ण नंदन पासवान तथा किसान नेता मनोज पासवान भी उपस्थित रहे।

सभा को संबोधित करते हुए राधा मोहन सिंह ने दीर्घकालिक कृषि उत्पादकता सुनिश्चित करने के लिए मृदा संरक्षण और सतत पोषक तत्व प्रबंधन के महत्वपूर्ण महत्व पर बल दिया। उन्होंने नियमित मृदा परीक्षण, मृदा स्वास्थ्य कार्डों के प्रभावी उपयोग तथा उर्वरकों के विवेकपूर्ण उपयोग, विशेष रूप से यूरिया के अंधाधुंध प्रयोग को कम करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने खेत बचाओ अभियान के क्रियान्वयन में भाकृअनुप संस्थानों के प्रयासों की सराहना की, जो कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा निकटता से निगरानी की जा रही एक प्रमुख पहल है, जिसका उद्देश्य मृदा स्वास्थ्य की बहाली और कृषि लाभप्रदता में सुधार करना है।

अपने स्वागत संबोधन में डॉ. राघवेंद्र सिंह, निदेशक, भाकृअनुप–एमजीआईएफआरआई, ने केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा परिकल्पित इस अभियान की दृष्टि को रेखांकित किया। उन्होंने जानकारी दी कि आईसीएआर–एमजीआईएफआरआई के वैज्ञानिक 1–30 जून, 2026 के दौरान बिहार भर में गांव स्तर पर गहन जनसंपर्क कार्यक्रम संचालित कर रहे हैं, ताकि उर्वरकों के संतुलित उपयोग, समेकित पोषक तत्व प्रबंधन, मृदा स्वास्थ्य बहाली तथा जलवायु–सहिष्णु कृषि पद्धतियों को बढ़ावा दिया जा सके।

कार्यक्रम में पूर्वी चंपारण जिले के पांच प्रखंडों (कोटवा, तुरकौलिया, मोतिहारी, पिपराकोठी और चकिया) के लगभग 550 किसानों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। तकनीकी सत्रों के दौरान विशेषज्ञों ने किसानों को मृदा स्वास्थ्य में सुधार और फसल उत्पादकता को बनाए रखने के लिए उर्वरकों के संतुलित एवं विवेकपूर्ण उपयोग, फसल प्रणालियों में दलहनी फसलों को शामिल करने, हरी खाद, वर्मी कम्पोस्टिंग, फसल अवशेष प्रबंधन तथा समेकित पोषक तत्व प्रबंधन के महत्व के प्रति जागरूक किया।

ज्ञान के प्रसार को सुदृढ़ करने के लिए वैज्ञानिकों ने हरी खाद, वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन तथा प्राकृतिक खेती के आदानों की तैयारी पर व्यावहारिक प्रदर्शन किए, जिससे किसानों को पर्यावरण–अनुकूल कृषि प्रौद्योगिकियों का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हुआ।

एससीएसपी के अंतर्गत किसान सहायता पहल के तहत आयोजकों द्वारा क्षेत्र की कृषि–जलवायु परिस्थितियों के अनुरूप पीएनआर–381, पूसा–44 और पूसा–1824 किस्मों के 25 क्विंटल गुणवत्तायुक्त धान बीज, 325 आम के पौधे (अम्रपाली, पूसा अरुणिमा और मल्लिका) तथा 200 लीची के पौधे (शाही और चाइना लीची) वितरित किए गए।

यह कार्यशाला वैज्ञानिक कृषि प्रौद्योगिकियों के प्रसार, किसानों की क्षमता निर्माण, सतत कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने तथा अनुसूचित जाति किसान समुदायों के बीच गुणवत्तायुक्त कृषि आदानों के वितरण के लिए हुई थी।

अंग प्रदेश में संघ की बीज बोने वाले बाबा साहेब आपटे

–बसंत राणा

1948 का संघ पर प्रतिबंध– महात्मा गांधी की हत्या के पश्चात सरकार ने 4 फरवरी 1948 को संघ पर प्रतिबंध लगा दिया। शासन के सहयोग से संघ पर चर्तुदिक सामूहिक प्रहार किये। हिंसा, आगजनी, लूटपाट का तांडव किया। हालांकि हिंदू संगठन के बारे में गांधीजी के विचार भी संघ के समान ही थे ! एक बार संघ संस्थापक डॉक्टर जी गांधीजी से मिले तथा हिंदू संगठन के बारे में उनके विचार जानना चाहे। गांधीजी ने कहा, ''मैं भी चाहता हूं कि समाज संगठित हो!'' परन्तु मेरा आग्रह है, की ऐसा कार्य अन्य समाजों के विरुद्ध न हो। डॉक्टर जी ने कहा कि मैं पूरी तरह सहमत हूँ। वास्तव में संघ किसी अन्य समाज के विरुद्ध हिन्दू संगठन नही है!

परंतु दुर्भाग्य से तत्कालीन सरकार के द्वारा गांधी जी की हत्या का कलंक संघ के माथे मढ़ने का पाप किया। गांधीजी की हत्यारा पर मुकदमा चला, उसे फांसी की सजा हुई, पर पूरे मुकदमे में कहीं संघ का नाम नहीं आया। फिर भी सरकार प्रतिबंध हटाने को तैयार नहीं था। तब परम पूज्य गुरुजी का आदेश हुआ कि संघ की शाखा लगाई जाए। मुंगेर में भी संघ की शाखा लगने लगी। स्वयंसेवकों को पुलिस पकड़ने लगी । फिर संघ को सत्याग्रह करना पड़ा और उसकी संख्या लगभग 300 की होगी, उसमें कुछ प्रमुख नाम यहां दिया जा रहा है ।

माननीय बाबा साहेब आपटे (अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख) का बिहार प्रवास का कार्यक्रम चल रहा था। उस समय उनका संयोगवश मुंगेर जिले में ही प्रवास चल रहा था । वह यहीं से पकड़ कर भागलपुर सेंट्रल जेल भेज दिए गए । उन्हें कमर में रस्सी तथा हथकड़ी लगा कर ले जाया गया । वही मुंगेर से ताराकांत झा, साधन चंद्र सेन, रामलखन गुप्ता, प्रकाशचंद्र गुप्ता, स्वामीनाथ मिश्र, नेमधारी शर्मा, अखिलेश्वर प्रसाद गुप्ता, रामजी श्रीवास्तव, राधाकृष्ण केसरी, गोविंदसाह, महेश शर्मा, सीताराम शर्मा, जगन्नाथ प्रसाद वर्णवाल, रामचंद्र यादव महावीर यादव, शिव प्रसाद, ब्रह्मदेव पंडित, दुर्गाजी, अखिल मंडल, भोला यादव, लक्ष्मी प्रसाद वर्मा, कैलाशचंद्र वर्मा, इंद्रदेव गुप्ता, डॉक्टर जगदीश प्रसाद, जगन्नाथ प्रसाद, नरसिंह पंडित, बद्री प्रसाद राजगढ़िया, अश्वनी कुमार वर्मा, काशी प्रसाद राजगढ़िया, नरदेव केशरी आदि स्वयंसेवकों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। वर्तमान संघ कार्यालय (माधव निलियम) गार्डन बाजार को पहले अमर निकेतन के नाम से जाना जाता था। वहां पुलिस का पहरा बैठाया गया। अंततः सुप्रीम कोर्ट ने संघ की संलिप्ता को अस्वीकार कर क्लीन चिट दे दिया और सरकार भी जनमानस की भावना को देखकर संघ पर से प्रतिबंध कुछ शर्तों के साथ हटा लिया।

संघ के स्वयंसेवक एवं अधिकारी प्रचारक संघ संघटनात्मक ढांचा के साथ समाज के अन्य कार्यों में भी सहयोगी होते थे। इसी क्रम में स्वामी सत्यानंद जी योग विद्या का केंद्र मुंगेर में ही खोलना चाहते थे, तथा उसे योग विद्यालय का उद्घघाटन परम पूजनीय श्रीगुरुजी से करना चाहते थे। उनके आग्रह पर परम पूज्य गुरुजी दिनांक 1 नवंबर, 1966 को विद्यालय का उद्घाटन मुंगेर के लाल दरवाजा स्थित ख्यात नामा गोयनका धर्मशाला में किये। कार्यक्रम बड़ा ही भव्य एवं प्रभावशाली कार्यक्रम और ऐतिहासिक था। उद्घघाटन के पश्चात परम पूज्य गुरुजी अपने बोध प्रदत मार्गदर्शन से लोगों को लाभान्वित किया! इस कार्यक्रम में मुंगेर नगर से बाहर के प्रतिष्ठित बुद्धिजीवी बड़ी संख्या में पधारे थे। बाद के दिनों में

बिहार योग विश्वविद्यालय कर्ण चौरा स्थान पर स्थानांतरण हो गया, जहां देश–विदेश से योग विद्या कोर्स करने आते हैं। यह विश्व का पहला योग विश्वविद्यालय में सुमार है। श्रीगुरुजी के प्रवास कार्यक्रम का लाभ उठाते हुए मुंगेर नगर में गो–रक्षा महा अभियान का सार्वजनिक कार्यक्रम का भी आयोजन आयोजकों ने किया था। इस अवसर पर नगर में नागरिकों की ओर से लगभग सभी चौराहों तथा मोहल्ले में स्वागत द्वारा बनाए गए थे।

पोस्टर पर्चे से जानकारी दी गई थी, ध्वनि विस्तारक यंत्र द्वारा राष्ट्रीय गीत सहनाई आदि बजाए जा रहे थे। आपार जन समूह अपने प्रिय नेता के दर्शन हेतु सड़क के दोनों और खड़े थे। जैसे ही उन की कर नगर में प्रवेश की 'भारत माता की जय' की जयकारों से आसमान गूंज उठा।

सांय में नगर के टाउन हॉल के प्रांगण में सार्वजनिक कार्यक्रम का आयोजन था। मुख्य अतिथि के रूप में परम पूजनीय श्रीगुरुजी ने संबोधित किया। सभा की अध्यक्षता मुंगेर के वरीय अधिवक्ता श्री शत्रुधन प्रसाद सिंह ने की! मंच पर गोरक्षा महाअभियान समिति के नगर अध्यक्ष रामचंद्र प्रसाद सिन्हा (अधिवक्ता) प्रान्त संघचालक मा. कृष्णबल्लव प्रसाद नारायण सिंह (बबुआ जी) भी उपस्थित थे।

परम पूजनीय श्रीगुरुजी का गोरक्षा ओजस्वी भाषण सुनने के लिए बहुत बड़ी संख्या में लोग टाउन हॉल के मैदान के चारों ओर की सड़कों पर भी खड़े होकर बड़ी एकाग्रता से उनके भाषण सुनते रहे। इसके अतिरिक्त जिले में गोहत्या बंद हो उसके समर्थन में कई हजार हस्ताक्षर अभियान के अंतर्गत कई हजार हस्ताक्षर प्रांत में भेजा गया, जिसे पूरे देश के साथ राष्ट्रपति डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद जी को समर्पित किया गया था ।

आपातकाल– बिहार से जयप्रकाश नारायण जी के नेतृत्व में तत्कालिक सरकार के विरुद्ध मोर्चा खोल, जो 'संपूर्ण क्रांति' के नाम से देश में प्रचलित हुआ! बिहार प्रदेश लोक संघर्ष समिति नामक एक समिति का गठन कर पूरे राज्य में आंदोलन की शुरुआत की गई! जिसमें जयप्रकाश बाबू के पीछे पूरा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और संघ की सभी वैचारिक संगठन खड़ा हो गया। इसी आभा मंडल को देखते हुए श्रीमती इंदिरा गांधी एक सांस्कृतिक एवं सामाजिक संगठन संघ को भी प्रतिबंधित कर दिया। 1 अगस्त 1975 को बिहार बंद के दौरान पूरे बिहार से 500 व्यक्ति गिरफ्तार किए गए। पटना में संघ के सहप्रांत संचालक भोलानाथ झा को 07 स्वयंसेवकों के साथ दमन विरोधी पर्चे बाँटते हुए बंदी बनाए गए। अंग क्षेत्र के मुंगेर जिले के बेगूसराय में छात्रों का विशाल जुलूस पर पुलिस ने उस पर लाठीचार्ज किया। 15 मार्च को विशाल जन समूह की उपस्थिति में बेगूसराय चौक पर तानाशाही का पुतला जलाया गया। मुंगेर नगर में तानाशाही के विरोध में नारे लिखे गए और प्रचुर मात्रा में पर्चे बांटे गए। मुंगेर में आपातकाल की घोषणा होते हैं छात्र संघर्ष समिति के आवाहन पर बाजार बंद हो गए। भागलपुर में प्रत्येक चौराहे पर काले झंडे गाड़े और काले पट चिंह लगाए गए। 1975 का आपातकाल में भी अंग प्रदेश (मुंगेर) के स्वयंसेवकों ने अपूर्व साहस दिखाया। इस अवसर पर भी सैकड़ो स्वयंसेवक सत्याग्रह में भाग लिए, जिनमें कुछ के नाम निम्नलिखित है –

सर्व श्री माननीय जगन्नाथ तिवारी (अधिवक्ता), प्रोफेसर जानकी शरण पाण्डेय, साधनचंद्र सेन, विश्वनाथ प्रसाद गुप्ता, द्वारिका प्रसाद वर्मा, शिवनंदन सिंह, भोला प्रसाद यादव, बृजनंदन प्रसाद, चंद्रराज गुप्ता, नरदेव भगत (जमुई),रामलखन गुप्ता, प्रेमनाथ पाण्डेय, डॉ. चंद्रदेव विश्वास, अखिलेश्वर प्रसाद गुप्ता, भोला प्रसाद साह (झाझा), महेश शर्मा,अशोक सिंह, स्वामीनाथ मिश्रा, शशिभूषण प्रसाद, कृष्णकांत शर्मा, बाबूलाल मंडल, गोपाल पोद्दार, अशोक चौधरी ,गणपति यादव, राजेंद्र प्रसाद,जगदंबी प्रसाद यादव, केवल महंत ,रतन प्रसाद, गोपाल पटेल, हरिप्रसाद वर्मा, अशोक कुमार अम्बष्ठ आदि प्रमुख है इनमें कुछ लोग मीसा तथा डी. आई.आर. में बंद हुए। पूरे प्रतिबंध के दौरान संघ कार्यालय अमर निकेतन (वर्तमान में माधव निलियम) सील कर दिया गया। प्रतिबंध उठने के पश्चात ही कार्यालय का सील खुला तथा समान मिले पर सभी सामान बर्बाद हो गए थे।

अब पंचायतों से निकलेंगे चैंपियन

बिहार सरकार ग्रामीण खेल संस्कृति को मजबूत करने के लिए प्रत्येक पंचायत में ग्राम पंचायत खेल क्लबों का गठन कर रही है। गया जी सहित पूरे बिहार में ऑनलाइन सदस्यता अभियान जारी है, जिससे गांवों की प्रतिभाओं को राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचने का अवसर मिलेगा।

बिहार के गांवों में प्रतिभा की कभी कमी नहीं रही। खेतों की मेड़ों पर दौड़ने वाले बच्चे, खुले मैदान में कबड्डी और फुटबाल खेलने वाले युवा तथा सीमित संसाधनों में क्रिकेट, बालीबाल और तीरंदाजी में हुनर दिखाने वाले खिलाड़ी अब अपनी प्रतिभा को नई पहचान दिला सकेंगे।

बिहार सरकार का खेल विभाग और बिहार राज्य खेल प्राधिकरण (बीएसएसए) ग्रामीण खेल संस्कृति को मजबूत करने के लिए बड़ा अभियान चला रहा है।

इसके तहत प्रत्येक पंचायत में ग्राम पंचायत खेल क्लब का गठन किया जा रहा है। गयाजी जिले में भी इसकी शुरुआत हो चुकी है और एक जुलाई से 15 अगस्त तक ऑनलाइन सदस्यता अभियान चलाया जा रहा है।

खेल विभाग का उद्देश्य केवल प्रतियोगिताएं कराना नहीं, बल्कि गांवों में ऐसा खेल वातावरण तैयार करना है, जहां हर बच्चे को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिल सके।

गांवों से शुरू होगी खिलाड़ियों की नई यात्रा

विभाग का मानना है कि गांवों में मौजूद प्रतिभाओं को यदि सही मंच और संसाधन मिलें तो वे प्रखंड, जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर तक पहुंच सकते हैं।

पंचायत स्तर पर खिलाड़ियों की पहचान और प्रशिक्षण की व्यवस्था होने से ग्रामीण युवाओं के लिए आगे बढ़ने के नए रास्ते खुलेंगे।

जिला खेल पदाधिकारी नेहा कुमारी ने बताया कि पंचायत खेल क्लब ग्रामीण युवाओं को एक संगठित मंच उपलब्ध कराएंगे।

प्रत्येक पंचायत में अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष और सदस्य मिलकर खेल गतिविधियों का संचालन करेंगे। इससे गांवों में नियमित अभ्यास और प्रतियोगिताओं का आयोजन आसान होगा।

ऑनलाइन पंजीकरण से जुड़ेंगे खिलाड़ी

खिलाड़ियों को ऑनलाइन पोर्टल पर पंजीकरण कराना होगा। पंजीकरण के बाद वे अपने पंचायत खेल क्लब के सदस्य बन जाएंगे और खेल विभाग की विभिन्न योजनाओं का लाभ उठा सकेंगे। इससे खिलाड़ियों का डेटा तैयार होगा और प्रतिभाओं की पहचान करने में आसानी होगी।

खेल विभाग का मानना है कि तकनीक के जरिए ग्रामीण प्रतिभाओं को राज्य स्तरीय खेल व्यवस्था से जोड़ना अधिक प्रभावी साबित होगा। इससे खिलाड़ियों को समय पर सूचना और अवसर मिल सकेंगे।

कई खेलों पर रहेगा फोकस

पंचायत खेल क्लबों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में लोकप्रिय और प्रतिस्पर्धी दोनों तरह के खेलों को बढ़ावा दिया जाएगा।

इनमें एथलेटिक्स, फुटबाल, क्रिकेट, कबड्डी, वालीबाल, खो–खो, हैंडबाल, हाकी, बैडमिंटन, तीरंदाजी, कुश्ती, भारोत्तोलन, योग और पारंपरिक ग्रामीण खेल शामिल हैं।

इन खेलों के माध्यम से बच्चों और युवाओं में फिटनेस, अनुशासन, टीम भावना और प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित होगी। साथ ही उन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए स्थानीय स्तर पर ही मंच मिलेगा।

शुरू होगा पंचायत खेल महोत्सव

सदस्यता अभियान समाप्त होने के बाद दो अक्टूबर 2026 से पंचायत स्तरीय खेल महोत्सव की शुरुआत होगी। यह प्रतियोगिता अगले वर्ष मार्च तक चलेगी।

पंचायत स्तर पर बेहतर प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी प्रखंड, जिला और राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में भाग लेंगे।

खेल विभाग का मानना है कि यदि प्रतिभाओं की पहचान गांव से शुरू होगी, तो बिहार को भविष्य में और बेहतर खिलाड़ी मिल सकेंगे। इससे ग्रामीण युवाओं के सपनों को भी नई उड़ान मिलेगी।

खिलाड़ियों को प्रशिक्षण और खेल सामग्री

खेल विभाग का लक्ष्य केवल खिलाड़ियों का पंजीकरण करना नहीं है। पंचायत खेल क्लबों के माध्यम से खिलाड़ियों को खेल सामग्री उपलब्ध कराने, नियमित अभ्यास कराने और प्रतियोगिताओं से जोड़ने की भी योजना बनाई गई है।

चर्चा ग्रीष्म से वर्षा ऋतु परिवर्तन की

–सुवर्णा श्रेया

मानव जीवन पर प्रकृति का गहरा प्रभाव होता है। प्रकृति ऋतुओं के अनुरूप आहार प्रदान करती है, पर उसका हमें समुचित प्रयोग का ज्ञान न होने से हमारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव भी पड़ता है। यदि मनुष्य ऋतु के अनुसार अपने आहार–विहार में परिवर्तन नहीं करता है तो शरीर में दोषों का असंतुलन उत्पन्न होकर अनेक रोगों का कारण बनता है। इसलिए आयुर्वेद में ऋतुचर्या का विशेष महत्व बताया गया है। आचार्यों ने कहा है कि मनुष्यों को प्रत्येक ऋतु में उत्पन्न होने वाले शीत, उष्ण, रुक्ष आदि गुणों को समझकर उसी के अनुसार आहार–विहार का पालन करना चाहिए।

ग्रीष्म ऋतु आदान काल की अंतिम ऋतु है। इस समय सूर्य की तीव्र किरणें पृथ्वी एवं शरीर की आर्द्रता को कम कर देती हैं। परिणामस्वरूप शरीर में जल की कमी, अधिक पसीना, थकान, कमजोरी तथा वात का संचय होने लगता है। इसके विपरीत वर्षा ऋतु विसर्ग काल का प्रारंभ मानी जाती है। इस समय वातावरण में आर्द्रता, ठंडक तथा अम्लता बढ़ जाती है, जिससे जठराग्नि मंद हो जाती है और ग्रीष्म में संचित वात दोष प्रकुपित हो जाता है। पित्त का संचय भी प्रारंभ हो जाता है।

चरक संहिता में वर्णित है–

ग्रीष्मेषु यथाक्रमं रौक्ष्यमुत्पादयन्तो रूक्षान् रसांस्तिक्तकषायकटुकांश्चाभिर्वर्धयन्तो नृणां दौर्बल्यमावहन्ति ॥

भावार्थ– आदान काल में तिक्त, कषाय एवं कटु रस की प्रधानता रहती है जिससे मनुष्यों के शरीर में दुर्बलता उत्पन्न हो जाती है। उसी प्रकार विसर्ग काल में मधुर, अम्ल एवं लवण रस का प्रभाव अधिक होता है, जिससे मनुष्यों का शारीरिक बल बढ़ जाता है ।

ग्रीष्म से वर्षा ऋतु में होने वाले शारीरिक परिवर्तन

ग्रीष्म ऋतु के दौरान अत्यधिक तापमान के कारण शरीर से पसीने के माध्यम से जल एवं लवणों की हानि होती है। इससे शरीर में

निर्जलीकरण, थकावट तथा कार्यक्षमता में कमी देखी जाती है। अधिक गर्मी के कारण भूख और जठराग्नि अपेक्षाकृत कमजोर हो जाती है। जब वर्षा ऋतु प्रारंभ होती है, तब वातावरण में नमी बढ़ जाती है। जलवायु में अचानक परिवर्तन होने से पाचन शक्ति और अधिक मंद हो जाती है। इस समय दूषित जल एवं भोजन के कारण जठरांत्र संबंधी रोगों, त्वचा रोगों तथा संक्रामक रोगों की संभावना बढ़ जाती है। आयुर्वेद के अनुसार इस ऋतु में वात का प्रकोप तथा पित्त का संचय होता है, इसलिए विशेष सावधानी आवश्यक होती है।

वर्षा ऋतु में पथ्य–

आयुर्वेद वर्षा ऋतु में हल्का, सुपाच्य तथा ताज़ा भोजन करने की सलाह देता है। पुराना शालि चावल, जौ, गेहूँ, मूंग की दाल, यवागू, गर्म भोजन तथा उबला हुआ या शुद्ध जल हितकर माना गया है। भोजन में अल्प मात्रा में घृत का सेवन तथा सैंधव लवण का उपयोग पाचन में सहायक होता है। अदरक, जीरा, काली मिर्च, पिप्पली तथा हींग जैसे दीपनीय–पाचनीय द्रव्यों का उचित मात्रा में सेवन लाभकारी होता है। स्वच्छ वस्त्र धारण करना, पैरों को गीला न रखना, पर्याप्त नींद लेना तथा मच्छरों एवं दूषित वातावरण से बचना भी आवश्यक है।

वर्षा ऋतु में अपथ्य–

वर्षा ऋतु में बासी भोजन, दूषित जल, अधिक तले हुए पदार्थ, उद्मन्थ, भारी एवं अभिष्यन्दी भोजन, अत्यधिक ठंडे पेय तथा अनियमित भोजन से बचना चाहिए। दिन में सोना, वर्गना, अत्यधिक परिश्रम करना तथा रात्रि जागरण भी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक माना गया है। इन कारणों से वात एवं पित्त दोनों विकृत होकर अनेक रोगों को जन्म दे सकते हैं।

मातुश्री का दर्शन है 'अहिल्या रूपेण संस्थिता'

–डॉ. लोकेन्द्र सिंह

"सनातन संस्कृति में सर्वश्रेष्ठ धर्म है 'मानव धर्म'। मानवता की स्थापना करना ही धर्म की स्थापना करना है। देवी अहिल्याबाई होलकर ने धर्म की स्थापना हेतु अपना संपूर्ण जीवन समर्पित किया। समस्त प्रजा को वात्सल्य से सींचने वाली देवी अहिल्याबाई होलकर पूरे मालवा की मातुश्री कहलाई। अहिल्याबाई का संपूर्ण जीवन न्याय प्रियता, सद्चरित्र, संस्कार अनुशासन और धर्म के स्तंभों पर मजबूती से खड़ा है।"

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. साधना बलवटे की पुस्तक 'अहिल्या रूपेण संस्थिता' का केंद्रीय भाव यही है। नाट्यरूप में प्रस्तुत पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होलकर के जीवन से उन्होंने भारत की बेटी के संघर्ष, साहस और नेतृत्व की कहानी सुनाई है। यह गाथा आपको प्रारंभ से अंत तक बाँधे रखती है, फिर भले ही आपने देवी अहिल्याबाई की कहानी पहले से सुन भी क्यों न रखी हो। पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होलकर के 300वें जयंती वर्ष में यह पुस्तक अवश्य पढ़ी जानी चाहिए।

'अहिल्या रूपेण संस्थिता' की प्रस्तावना भी पठनीय और महत्वपूर्ण है। पुस्तक के माध्यम से एक महत्वपूर्ण तथ्य हमारे सामने आता है। आखिर हम एक रानी के लिए पुण्यश्लोक जैसे विशेषण का उपयोग क्यों करते हैं? यह जानकार भी गौरव की अनुभूति होती है कि भगवान विष्णु, धर्मराज युधिष्ठिर और राजा नल के पश्चात देवी अहिल्याबाई होलकर ही एकमात्र व्यक्तित्व हैं, जिन्हें उनकी उज्ज्वल छवि, शुभ चरित्र के कारण पुण्यश्लोक की उपाधि प्राप्त हुई है।

पुस्तक को पढ़ते हुए बौद्धिक बेईमानों की कारगुजारियां भी याद आती हैं। कैसे भारत के महान चरित्रों को उन्होंने अपने वैचारिक एवं राजनीतिक स्वार्थ पूर्ति के चक्कर में इतिहास लेखन के दौरान उपेक्षित किया है। वहीं, आक्रांताओं को उज्ज्वल चरित्र के नायक के तौर पर प्रस्तुत करने के लिए मनगढ़ंत कहानियां लिख

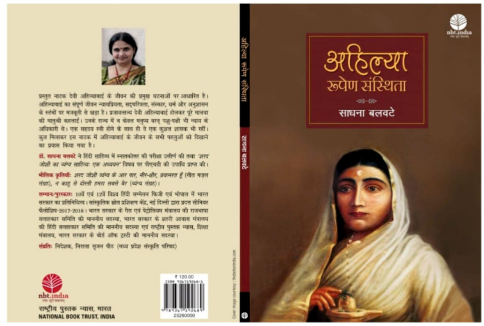

डालीं। तथाकथित इतिहासकारों ने एक क्रूर और अत्याचारी शासक औरंगजेब का महिमामंडन करने के लिए नैरेटिव बनाया कि वह टोपी सिलकर अपना खर्चा निकालता था। सत्ता के लिए अपने भाइयों की गर्दनें उतारने वाला शासक कैसी टोपियां सिलता होगा, हम सहज अंदाज लगा सकते हैं। अगर इतिहासकारों को त्यागपूर्ण भाव से शासन करने के उदाहरण ही प्रस्तुत करने थे, तो उनको झूठी कहानियां लिखने की बजाय देवी अहिल्याबाई की कथा सुननी चाहिए थी। राज्य की संपत्ति के विषय में अहिल्याबाई होलकर की दृष्टि कितनी उदात्त थी, उसका वर्णन इस पुस्तक में आया है।

मातुश्री अहिल्याबाई का मानना था कि राज्य की संपत्ति प्रजा के कल्याण के लिए होती है। इसका उपयोग राज परिवार का कोई भी व्यक्ति अपने व्यक्तिगत कार्य के लिए नहीं कर सकता। हम देवी अहिल्याबाई होलकर को धार्मिक कार्यों के लिए आगे बढ़कर दान करने वाली नायिका के तौर पर जानते हैं। आपको जानकर सुखद आनंद की अनुभूति होगी कि उन्होंने जो धर्म संबंधी निर्माण कार्य कराए, उसका व्यय उन्होंने अपने निजी खर्च से किया, जिसे खासगी कहते थे।

आज आवश्यकता है लोकमाता अहिल्याबाई के जीवन पृष्ठों को पुनः पढ़ा जाए और उनका अनुकरण किया जाए। डॉ. बलवटे ने अपनी पुस्तक में एक स्थान पर उचित ही लिखा है कि शक्ति, विद्या, बुद्धि, लक्ष्मी और मातृत्व का समवेत रूप यदि किसी में देखना हो या किसी एक व्यक्तित्व को, इन शक्तियों का नाम देना हो तो वह एक ही होगा 'मातुश्री अहिल्याबाई होलकर'।

बेगूसराय का असफल बेटा बना अफसर

नावकोठी के सूरज कुमार ने 70वीं BPSC परीक्षा में एसडीएम पद पर चयनित होकर संघर्ष और दृढ़ संकल्प की मिसाल पेश की है। ताड़ी बेचने वाले पिता के बेटे सूरज ने चार असफलताओं के बाद पांचवें प्रयास में यह सफलता हासिल की।

बिहार लोक सेवा आयोग BPSC की 70वीं संयुक्त राज्य सिविल सेवा परीक्षा में नावकोठी के सूरज कुमार ने अपनी सफलता से संघर्ष, धैर्य और दृढ़ संकल्प की नई मिसाल पेश की है।

अनुसूचित जाति परिवार से आने वाले सूरज का चयन अनुमंडल पदाधिकारी (एसडीएम) के पद पर हुआ है। उनकी सफलता की कहानी इस बात का प्रमाण है कि कठिन परिस्थितियां भी मजबूत इरादों के आगे टिक नहीं पातीं।

ताड़ी बेचकर बेटे को पढ़ाया, सपनों को नहीं टूटने दिया

सूरज के पिता रामचंद्र चौधरी पुश्तैनी पेशे के रूप में ताड़ी उतारने और बेचने का कार्य करते हैं। इसी आय से उन्होंने परिवार का भरण–पोषण किया।

आर्थिक संसाधन सीमित थे, लेकिन उन्होंने बेटे की शिक्षा से कभी समझौता नहीं किया। परिवार ने हर कठिनाई का सामना किया, ताकि सूरज अपनी पढ़ाई पूरी कर सकें।

सूरज ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा एपीएस प्लस टू स्कूल, नावकोठी से पूरी की। इसके बाद जीडी कॉलेज, बेगूसराय से इंटरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की।

इसके बाद तमिलनाडु की प्रतिष्ठित अन्ना यूनिवर्सिटी, चेन्नई में प्रवेश लिया और वहां से इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग में बी.ई. (बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग) की डिग्री हासिल की।

इंजीनियरिंग के बाद चुनी प्रशासनिक सेवा की राह

इंजीनियरिंग पूरी करने के बाद सूरज के सामने निजी क्षेत्र में करियर बनाने के अवसर थे, लेकिन उन्होंने समाज और देश की सेवा को प्राथमिकता देते हुए प्रशासनिक सेवा में जाने का निर्णय लिया।

इसी उद्देश्य से वह दिल्ली पहुंचे और BPSC के साथ–साथ सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी में जुट गए। दिल्ली में तैयारी के दौरान सूरज का संघर्ष और भी कठिन हो गया।

उन्हें लगातार चार प्रयासों में असफलता मिली। हर असफलता के साथ आर्थिक तंगी, पारिवारिक दबाव और समाज के ताने भी बढ़ते गए। कई लोगों ने उनकी क्षमता पर सवाल उठाए और तैयारी छोड़ देने की सलाह भी दी।

लेकिन सूरज ने हार नहीं मानी। उन्होंने हर असफलता से सीख ली, अपनी कमजोरियों को दूर किया और पूरे आत्मविश्वास के साथ तैयारी जारी रखी।

आखिरकार पांचवें प्रयास में BPSC की 70वीं संयुक्त प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता हासिल कर एसडीएम बनने का सपना साकार कर दिखाया।

माता–पिता और गुरुजनों को दिया सफलता का श्रेय

सूरज ने अपनी इस उपलब्धि का श्रेय अपने माता–पिता, गुरुजनों और परिवार के सदस्यों को दिया। उन्होंने कहा कि यदि परिवार का विश्वास और शिक्षकों का मार्गदर्शन नहीं मिलता, तो यह मुकाम हासिल करना संभव नहीं था।

उन्होंने प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवाओं से भी अपील की कि असफलता से घबराने के बजाय उससे सीख लेकर आगे बढ़ते रहें।

RNI No.-BIHHIN/2003/12538 Postal Reg:R-10/NP-39/Patna GPO/26-28

युवा संवाद कार्यक्रम

डाक टिकट

पता